Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र

विपरीत प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र

और

प्रत्यङ्गिरा कवच



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री

प्रत्यङ्गिरा स्तोत्र
विपरीत प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्
और प्रत्यङ्गिरा कवच

अनुवादक : पं. कुलपति मिश्र

मूल्य : 30.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार-249401
फोन : (01334) 226297

वितरक : रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : गगन बुक डिपो
4694, चरखेवालान (निकट नई सड़क, दाईवाड़ा)
दिल्ली-6

शब्द सज्जा : जे के प्रिन्टोग्राफर्स, दिल्ली-6

मुद्रक : राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92

© रणधीर प्रकाशन

PRATYANGIRA STOTRA
Aur
VIPREET PRATYANGIRA STOTRA
Translated by : Pt. Kulpati Mishra
Published by : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रत्यंगिरा के रूप में भगवती भद्रकाली अथवा महाकाली की आराधना की जाती है जो साधक के दुष्परिणामी ग्रहों का निवारण करने वाली और मनोरथ पूर्ण करने सक्षम हैं।

प्रत्यङ्गिरा ध्यानम्

टङ्कं कपालं डमरुं त्रिशूलं
सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशा-ऽसित-भीमदंष्ट्रा
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥

प्रत्यङ्गिरा मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे मम रक्ष रक्ष,
मम शत्रूणां भक्ष भक्ष स्वाहा।

प्रत्यङ्गिरा गायत्री मन्त्र

ॐ प्रत्यङ्गिरायै विद्महे शत्रुनिषूदिन्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ श्री चण्डोग्रशूलपाणि तन्त्रान्तर्गत—

प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्

विनियोग

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमन्त्रस्य वामदेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, प्रत्यङ्गिरा देवता, ह्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, सर्वार्थसाधने विनियोगः।

दाहने हाथ में जल लेकर '**अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरास्तोत्रमन्त्रस्य**' से आरम्भ कर '**सर्वार्थसाधने विनियोगः**' तक पढ़कर जल को नीचे किसी पात्र में गिरा देना चाहिए।

मन्दरस्थं सुखासीनं भगवन्तं महेश्वरम्।
समुपागम्य चरणैः पार्वती परिपृच्छति॥ १॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्दराचल पर सुखपूर्वक बैठे हुए भगवान् शंकर के पास आकर पार्वती ने पूछा।

देव्युवाच

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया।
नर-नारी हितार्थाय बालानां रक्षणाय च॥२॥

देवी ने कहा—जो प्रत्यङ्गिरा नामक महाविद्या उत्तम फल देने वाली है, जिससे स्त्री-पुरुषों का हित तथा बालकों की रक्षा होती है।

राज्ञां माण्डलिकानां च दीनानां महेश्वर!
विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणाऽर्थसाधिनी॥३॥

माण्डलिक राजा, दीनजन, विद्वान् तथा द्विजातियों का जो विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करने वाली है।

महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्निभयेषु च।
व्याध्र-दंष्ट्रा-कराघाते नदी-नद-समुद्रगे॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्मशाने दुर्गमे घोरे सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे।
अभिचारेषु सर्वेषु रणे राजकुलेषु च॥५॥
धारिता पाठिता देवि! समीहितफलप्रदा।
पाठिता साधकेन्द्रेण कारयेत् स्वान् मनोरथान्॥६॥

भयंकर, महाभय, बिजली, अग्निभय, व्याघ्र, नदी, नद, समुद्र, श्मशान, दुर्गमस्थान, घोर संग्राम, शत्रुसंकट, मारणादि अभिचार और राजकुल आदि में धारण तथा पाठ से जो अभिलाषित वस्तु देने वाली है, साधकों के द्वारा पढ़ने पर जो सभी मनोरथ पूर्ण करती है।

सौभाग्यजननीं नित्यं नृणां वश्यकरीं तथा।
तां सुविद्यां सुरश्रेष्ठ! कथयस्व मयि प्रभो॥७॥

जो सम्पूर्ण सौभाग्यों की जननी तथा समस्त मनुष्यों को वश में करने वाली है, हे सुरश्रेष्ठ, आप

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुझे उस विद्या को बताइए।

भैरव उवाच

साधु साधु महाभागे! जन्तूनां हितकारिणि।
त्वद्-वाक्येन सुरारिघ्ने! कथयामि न संशयः ॥८॥

भैरव ने कहा—हे प्राणियों का हित करने वाली महाभागे पार्वती! तुमने यह प्रश्न ठीक ही किया। हे असुरों का विनाश करने वाली, मैं उस महाविद्या को तुम से कह रहा हूँ, इसमें संशय नहीं है।

देवी प्रत्यङ्गिरा विद्या सर्वग्रहनिवारिणी।
मर्दिनी सर्वदुष्टानां सर्वपापप्रणाशिनी ॥९॥

प्रत्यङ्गिरा देवी, जो महाविद्या के नाम से विख्यात है वही सम्पूर्ण ग्रहों का निवारण करने वाली, दुष्टों का मर्दन करने वाली तथा समस्त पापों का विनाश करने वाली है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौभाग्यजननी देवी बलपुष्टिकारी तथा।
चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषु पवनेषु च॥१०॥

वह देवी सौभाग्य की जननी (माता), बल तथा पुष्टि प्रदान करने वाली है,चतुष्पथ, घोर वन, झंझावात।

राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते।
पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता॥११॥

राजद्वार, दुर्भिक्ष तथा महाभय उपस्थित होने पर, पढ़ने तथा पाठ कराने से सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली है।

लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।
मुच्यते सर्पपापेभ्यो मृत्युं नास्ति कदाचन॥१२॥

जो महाविद्या के इस मन्त्र तथा यन्त्र को लिखकर बाहु, हाथ, कण्ठ तथा सिर में धारण करते हैं, वे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं और कभी अकाल मृत्यु से नहीं मरते।

धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् ध्रुवम्।
धारिता वाऽर्चिता विद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदिता॥ १३॥

योग से युक्त पुरुष यदि इस महाविद्या के यन्त्र तथा मन्त्र को धारण करे तो निश्चय ही उसकी रक्षा होती है। धारण तथा अर्चन-पूजन से यह प्रत्यंगिरा शुभफल देने वाली है।

गृहे चैवाऽष्ट-सिद्धिश्च देवी-राक्षस-पन्नगाः।
न तस्य पीडां कुर्वन्ति ये चाऽन्ये पीडकग्रहाः॥ १४॥

उसके घर में आठों सिद्धियों का निवास रहता है, देवता, राक्षस, पन्नग (सर्प) तथा अन्य पीड़ाकारक ग्रह उसके घर में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करते।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्यानामुत्तमा विद्या पठिता वाऽर्चिता सदा।
यस्याऽङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता॥ १५॥
सिद्धा सुसिद्धिदा नित्या विद्येयं परमा स्मृता।
श्रीमता घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी॥ १६॥

विद्याओं में सर्वोत्तम महाविद्या प्रत्यंगिरा भाषण से, पाठ से तथा पूजन-अर्चन से सिद्धि को प्रदान करने वाली है। यह महाविद्या नित्य है, भगवान् शंकर ने घोर (निष्पाप) रूप धारण कर इस घोररूपिणी (निष्पापा) महाविद्या का व्याख्यान किया है।

प्रत्यङ्गिरा मया प्रोक्ता रिपून् हन्यान्न संशयः।
हरिचन्दनमिश्रेण गोरोचन-कुङ्कुमेन च॥ १७॥

भगवान् भैरव ने कहा—हे पार्वती, मैं जिस प्रत्यंगिरा को तुम से कह रहा हूँ, वह शत्रुओं का विनाश करने वाली है। हरिचन्दन, गोरोचन और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुम्कुम से।

लिखित्वा भूर्जपत्रेषु धारणीया सदा नृभिः।
पुष्प-धूपै र्विचित्रेश्च बल्युपहार पूजनैः॥१८॥

भोजपत्र पर लिखकर इस प्रत्यंगिरा को मनुष्य को धारण करना चाहिए। पुष्प, धूप तथा विचित्र पुष्पों तथा बलि से नित्य पूजा करनी चाहिए।

पूजयित्वा यथान्यायं शान्तकुम्भेन वेष्टयेत्।
धारयेद्य इमां विद्यां निश्चितां रिपुनाशिनीम्॥१९॥

उपर्युक्त विधि से पूजा कर स्वर्ण के समान पीले वस्त्र से इसे लपेट कर धारण करने वाली है।

विलयं यान्ति रिपवः प्रत्यङ्गिरा-विधानतः।
यद्यत् स्पृशति हस्तेन यद्यत् खादति जिह्वया॥२०॥

प्रत्यंगिरा के शास्त्रीय अनुष्ठान मात्र से समस्त शत्रु विनष्ट हो जाते हैं तथा वह पुरुष जिसको अपने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हाथ से स्पर्श करता है, जिसको जिह्वा से खाता है।

अमृतं तद् भवेत् सर्वं मृत्युर्नास्ति कदाचन।
कर्मणा यो जपेद्यस्तु कृत्रिमं दारुणं सदा॥ २१॥

वह सब उसके लिए अमृत हो जाता है। उस पुरुष की कदापि मृत्यु नहीं होती और जो साधक इसको पढ़ता है उसको कभी कृत्रिम (बनावटी) तथा कठिन कष्ट नहीं होता।

भक्षितं तृप्तिमत्याशु नरस्य तस्य सुव्रते।
तथाऽस्यां पठ्यमानायां जीर्यते नाऽत्र संशयः॥ २२॥

हे सुव्रते, जो पुरुष प्रत्यंगिरा का पाठ करता है, उसको भोजन शीघ्र ही तृप्ति प्रदान करता है, तथा पच जाता है। और इसके पढ़ने पाठ करने से कभी बार्द्धक्य (बुढ़ापे) का अनुभव नहीं होता, यह निःसन्देह है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नृणां रक्षाकरी देवी सर्वसिद्धिकरी स्मृता।
सर्वमन्त्रविनाशी च गोलकस्थान्तरः परा॥ २३॥

यह प्रत्यंगिरा मनुष्यों की रक्षा करने वाली है, सिद्धि देने वाली है और यह परा है तथा गोलोक में निवास करने वाली है। इनके सामने सभी मन्त्रों का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

सर्वव्याधिहरी विद्या सिद्धिदात्री महेश्वरी।
प्राप्नोति वसुधां सर्वां रिपुहस्तगतां श्रियम्॥ २४॥

यह महाविद्या सम्पूर्ण व्याधियों का विनाश करने वाली है, सिद्धि देने वाली है। महाविद्या की उपासना करने वाला पुरुष शत्रु के हाथ में गई हुई भूमि को भी प्राप्त कर लेता है।

वशास्तस्यैव तिष्ठन्ति शत्रवः प्राणाहारकाः।
अभ्यस्यतां याति विद्यां सिद्धिविद्या-प्रसादतः॥ २५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाविद्या की उपासना करने से प्राणहारक शत्रु भी उसके वश में हो जाते हैं। इस सिद्ध विद्या के बारम्बार अनुष्ठान से मनुष्य विद्या को प्राप्त कर लेता है।

अबला च वशाद्यस्य सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः।
चराऽचरमिदं सर्वं स-शैलवन-काननम्॥ २६॥
नर-नारी-समाकीर्णं साधकस्य च सुव्रते।
सर्वत्र वशतां यान्ति यजमानस्य नित्यशः॥ २७॥

अनेक सुन्दरी स्त्रियाँ, उस पुरुष के वश में हो जाती हैं। हे सुव्रते, यह शैल, कानन समेत सारा चराचर विश्व जो नर-नारी समाकीर्ण है, उस साधक के वश में हो जाते हैं।

गोलकस्य प्रभावेण प्रत्यङ्गिरा-प्रभावतः।
त्रिपुरश्च मया दग्ध इमां विद्यां च बिभ्रता॥ २८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोलक यन्त्र के प्रभाव से तथा प्रत्यंगिरा के प्रभाव से और इस महाविद्या के धारण से ही मैंने त्रिपुर को जलाया।

निर्जितास्त्राऽसुराः सर्वे देवैर्विद्याभिमानिभिः।
गोलकं च प्रवक्ष्यामि भैषज्यं ते च सुव्रते॥ २९॥

जिस गोलक के प्रभाव से देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त किया, हे सुव्रते, उस गोलक का निरूपण करता हूँ।

पञ्चवर्णैः पञ्चदलैः द्वारर्धे द्वारशोभितम्।
द्वात्रिंशत्पत्रमध्ये तु लिखेन्मन्त्रस्य दैवतम्॥ ३०॥

कमल के चारों ओर पाँच-पाँच रंग के पाँच पत्रों के मध्य बत्तीस पत्रों में फट् से संयुक्त मन्त्र को लिखे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कूटस्थं कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।
फट्कारेण च संयुक्तं रक्षेच्च साधकोत्तमः॥ ३१॥

उस कमल की दसो दिशाओं में पाँच बीज स्थापित करे।

विष्णुक्रान्तां मदनकं कुंकुमं रोचनं तथा।
आरुष्करं विषारिष्टं सिद्धार्थं मालतीं तथा।
एतद् द्रव्यगणं भद्रे! गोलमध्ये निधापयेत्॥ ३२॥

विष्णुकान्ता, दमनक, कुम्कुम तथा रोचन, अरुष, विषारिष्ट, सिद्धार्थ तथा मालती आदि अष्टगन्ध को गोलक के मध्य में स्थापित कर।

सम्भृतं धारयेन्मन्त्री साधको मन्त्रवित् सदा।
अधुना सम्प्रवक्ष्यामि प्रत्यङ्गिरां सुभाषिताम्॥ ३३॥

मन्त्रवेत्ता साधक को धारण करना चाहिए। हे देवी, अब मैं प्रत्यंगिरा स्तोत्र को तुम से कहता हूँ सुनो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिव्यैर्मन्त्रपदैश्चित्तैः सुखोपायैः सुखप्रदैः।
पठेद्रक्षाभिधानेन मन्त्रराजः प्रकीर्तितः॥३४॥

स्वस्थ चित्त होकर, सुख का साधनभूत, और सुख देने वाले इस मन्त्र के प्रत्येक पदों को सुललित रूप से पढ़ना चाहिए। यह मन्त्र रक्षात्मक है और सभी मन्त्रों का राजा है।

माला मन्त्र

ॐ नमः शिवाय सहस्त्रसूर्येक्षणाय ॐ अनादिरूपाय अनादिपुरुषाय पुरुहूताय महामयाय महाव्यापिने महेश्वराय ॐ जगत्साक्षिणे सन्तापभूत-व्यापिने महाघोराऽतिघोराय ॐॐ महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐॐ हिलि हिलि ॐ हन हन ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गिलि गिलि ॐ मिलि मिलि ॐॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धम धम बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय सर्वान दुष्टान् ग्रस ग्रस पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय रं रं रं रं रं रक्ष रक्ष त्वं मां साधकं मां पाठकं च रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा।

ऐं ऐं हुँ हुँ रक्ष रक्ष सर्वभूतभयोपद्रवेभ्यो महामेघौघसर्वतोऽग्नि-विद्युदर्क-संवर्त-कपर्दिनि! दिव्यकणिकाम्भोरुह विकच-पद्म मालाधारिणि! शितिकण्ठाभखट्वां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कपालधृक् व्याघ्राजिनधृक् परमेश्वरप्रिये! मम शत्रून् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय देवता-पितृ-पिशाचोरग-नागाऽसुर-गरुड-गन्धर्व-किन्नर-विद्याधर-यक्ष-राक्षसान् ग्रहाँश्च स्तम्भय स्तम्भय ये च धारकस्य पाठकस्य वा सपरिवारस्य शत्रवस्तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय ये च सर्वे मम अविद्यां कर्म कुर्वन्ति कारयन्ति वा तेषाम् अविद्यां स्तम्भय स्तम्भय तेषां देशं कीलय कीलय तेषां बुद्धिर्घातय घातय ग्रामं घातय घातय रोमं कीलय कीलय शत्रु स्वाहा।

ॐॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ जः ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां विद्यां स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखे स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रे स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जःॐ ठः ठः मम शत्रूणां दन्तान् स्तम्भय। स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां जिह्वां स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणाम् उदरं स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं कीलय कीलय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं कीलय कीलय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं कीलय कीलय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं कीलय कीलय। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय। ॐ सर्वसिद्धिमहाभागे!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मम धारकस्य पाठकस्य वा सपरिवारस्य शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यं यं यं यं यं, रं रं रं रं रं, लं लं लं लं लं, वं वं वं वं वं, शं शं शं शं शं, षं षं षं षं षं, सं सं सं सं सं, हं हं हं हं हं, क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं, हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ, फट् स्वाहा। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ जूं सः फट् स्वाहा। ॐ नमो भगवति प्रत्यङ्गिरे! मम धारकस्य पाठकस्य वा सपरिवारस्य सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ हुं हुं हुं हुं, ॐ हुं हं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति! दुष्टचण्डालिनि! त्रिशूल-वज्राऽङ्कुशशक्ति-धारिणि! रुधिर-मांसल-वसाभक्षिणि! कपाल-खट्वाङ्गधारिणि! मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम मथ मथ सर्वदुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ हुं हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ॐ ह्रीं दंष्ट्राकरालिनि! मम कृते मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-प्रयोगविषचूर्णशस्त्रद्य-विचार-सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं कुरुते कारयन्ति करिष्यन्ति वा तान् सर्वान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हन हन हन प्रत्यङ्गिरे! त्वं मां धारकस्य स-
परिवारकं रक्ष रक्ष हुं हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ
ऐं ह्रीं श्रीं मम शरीरे रक्ष रक्ष फट् स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वरि! मम नेत्रे रक्ष
रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं ब्रह्माणि!
मम शिरो रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें
स्फ्रें हुं कौमारि! मम वक्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं वैष्णवि! मम कण्ठं
रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं
नारसिंहि! मम बाहू रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्री स्फ्रें स्फ्रें हुं वाराहि! मम
हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुं ऐन्द्रि! मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं चामुण्डे! मम गुह्यं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं माहेश्वरि! मम जंघे रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं मोहिनि! मम शत्रून् मोहय मोहय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं हुं प्रत्यङ्गिरे! मम शरीरं रक्ष रक्ष स्वाहा।

कूटस्था कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम्।
फट्कारेण समोपेतं रक्षत्वं साधकोत्तमे॥१॥

आठों दिशाओं के मध्य भाग में पाँच बीज एवं फट्कार से युक्त हे देवी, आप मेरी रक्षा करो।

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जृम्भिणी भ्रामरी रौद्री तथा संहारिणीति च ॥ २ ॥
शक्तयः शोषिणी चैव शत्रुपक्षनियोजितः ।
साधिता साधकेन्द्रेण सर्वशत्रुविनाशिनी ॥ ३ ॥

१. स्तम्भिनी, २. मोहिनी, ३. क्षोभिणी, ४. द्राविणी, ५. जृम्भिणी, ६. भ्रामरी, ७. रौद्री, ८. संहारिणी और ९. शोषिणी ये नौ शक्तियाँ श्रेष्ठ साधक के द्वारा साधित तथा शत्रु पक्ष में नियोजित होने पर समस्त शत्रुओं का विनाश करती है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं स्तम्भिनि! मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं मोहिनि! मम शत्रून् मोहय मोहय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं भ्रामिणि। मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्फ्रें हुं रौद्रि! मम शत्रून रौद्रय रौद्रय स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं संहारिणि! मम शत्रून् संहारय संहारय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं शोषिणी! मम शत्रून् शोषय शोषय स्वाहा।

य इमां धारयेद् विद्यां त्रिसन्ध्यं वाऽपि यः पठेत्।
सोऽपि दुष्टान्तको भूत्वा हन्याच्छत्रून् न संशयः ॥४॥

जो मनुष्य इस विद्या की अर्थात् इस प्रत्यंगिरा के मन्त्र को धारण करता है और तीनों संध्याओं में इसका पाठ करता है वह दुष्ट शत्रुओं को मारने में पूर्ण समर्थ होता है, इसमें संशय नहीं है।

सर्व हि रक्षयेद् विद्यां महाभय-विपत्तिषु।
महाभयेषु घोरेषु न भयं विद्यते क्वचित्।
सर्वान् कामानवाप्नोति मर्त्यो देवि! न संशयः ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाभय तथा विपत्ति काल में यह विद्या रक्षा करती है। घोर भयंकर स्थान में भी यह भयमुक्त करने वाली है। हे देवी, अधिक क्या कहें, इसके जप और पाठ करने वाले प्राणियों को सब कुछ निःसन्देह प्राप्त होता है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं प्रत्यङ्गिरे! विकटदंष्ट्रे! ह्रीं ह्रीं कालिकेलि! स्फ्रें स्फ्रें कारिणि मम शत्रून् छेदय छेदय स्वादय स्वादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रें स्फ्रें किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि श्रीं ह्रीं ऐं हुं हुं फट् स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अष्टोत्तरशतं जपेत् साक्षात् सिद्धीश्वरो भवेत्।
ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोऽनुष्टुप्-प्रकीर्तितम्।
देवता कौशिकी प्रोक्ता नाम प्रत्यङ्गिरैव सा॥६॥

उपर्युक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करने से मनुष्य सिद्धों का राजा हो जाता है। इस मन्त्र के भैरव ऋषि एवं अनुष्टुप् छन्द और कौशिकी देवता हैं। यही कौशिकी प्रत्यंगिरा के नाम से सुविख्यात हैं।

कूर्चबीजं षडङ्गानि कल्पयेत् साधकोत्तमः।
सर्वकृष्टोपचारैस्तु ध्यायेत् प्रत्यङ्गिरां शुभाम्॥७॥

उत्तम साधक षडंग-न्यास तथा कूर्चबीच करे। भगवती के प्रसन्न करने वाले अनेक उपचारों को एकत्रित कर प्रत्यंगिरा का ध्यान करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्

खड्गं कपालं डमरुं त्रिशूलं
सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिङ्गोर्ध्वकेशा-ऽसित-भीमदंष्ट्रा
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली॥८॥

वह भद्रकाली हमारा कल्याण करे, जो खड्ग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल को धारण करने वाली हैं। जिनके मस्तक में चन्द्रकला सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा ऊपर की ओर उठे हुए हैं, जिनके दाँत अत्यन्त चमकीले तथा उग्र व भयंकर हैं।

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमेकविंशतिवासरान्।
शत्रून् सन्नाशयेत्तं च प्रकारोऽयं सुनिश्चितम्॥९॥

इस प्रकार प्रतिदिन भगवती प्रत्यंगिरा का ध्यान कर इक्कीस दिन पर्यन्त भगवती के मन्त्र का जप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करना चाहिए। यह विधि निश्चित ही शत्रुओं का विनाश करने वाली है।

अथाऽष्टम्यामर्धरात्रौ शरत्काले महानिशि।
आराधिता च सा काली
तत्क्षणात् सिद्धिदा भवेत्॥ १०॥

शरत्-काल के नवरात्र में अष्टमी के अर्धरात्रि की महानिशा में आराधना करने से भगवती अवश्य ही मनोरथ को पूर्ण करने वाली होती हैं।

सर्वोपचारसम्पन्ना रक्तवस्त्रफलादिभिः।
पुष्पैश्च रक्तवर्णैश्च साधयेत् कालिका पराम्॥११॥

सम्पूर्ण पूजन के सामग्री से युक्त हो लाल वस्त्र, लाल फल तथा लाल फूलों से परा भगवती महाकाली का पूजन करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्षादूर्ध्वमजं मेषं मृगं वा विविधं बलिम्।
दद्यात् पूर्वं महेशानि! ततस्तु जपमाचरेत्॥१२॥

एक वर्ष तक निरन्तर जप करने के उपरान्त अज (बकरा), मेष (भेड़) मृग तथा अन्य प्रकार की बलि देनी चाहिए। तत्पश्चात् पुनः जप करना चाहिए।

एकहायनतः काली सत्यं सत्यं सुसिद्धिदा।
मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्याद् विचक्षणः॥१३॥

यह महाकाली एक वर्ष में सिद्धि प्रदान करने वाली है, यह बात सत्य है,सत्य है। प्रत्यंगिरा महाकाली के मूल मन्त्र से रात्रि में ही विद्वान् पुरुष को होम करना चाहिए।

मरीच-लाज-लवणैः सर्षपैर्मारणं भवेत्।
महासङ्कटरोगे च न भयं जायते क्वचित्॥१४॥

मरिच, लावा तथा नमक और सरसों का हवन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करने से मारणप्रयोग किया जाता है, इतना ही नहीं,उपर्युक्त विधि के हवन से महासंकट, रोग तथा भय उत्पन्न नहीं होते।

प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्ततः।
साध्यनामाङ्कितं कृत्वा शत्रुमय्यां न पुत्तलीम्॥ १५॥

प्रेत के पिण्ड को लेकर गोलक यन्त्र बनाए फिर उस पर शत्रु का नाम लिखकर शत्रु का पुतला बनाकर।

जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ प्रक्षिपेत् ततः।
एकायुतं जपं कृत्वा त्रिरात्रान्मरणं रिपोः॥ १६॥

उसमें प्राण प्रतिष्ठा करें। चिता की अग्नि में हवन करें। दस हजार जप करें तो निश्चय ही तीन रात्रि के भीतर शत्रु मर जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाज्वरो भवेत्तस्य तप्ताम्रशलाकया।
गुदाद्वारे प्रविन्यस्य सप्ताहान्मरणं रिपोः॥१७॥

जलते हुए ताँबे की सलाई से शत्रु का पुतला बना कर उपर्युक्त विधि से गुदा द्वार पर दागे तो शत्रु को महाज्वर उत्पन्न हो जाता है और वह सात रात के भीतर ही मर जाता है।

पुष्प समर्पण विधिः

एकविंशतिदिने आद्यन्तं जपं कृत्वा, नित्य १०८,
भुक्तौ मुक्तौ च शान्तौ च श्वेतपुष्पं विनिर्दिशते।
आकृष्टो च वशीकारे रक्तं पुष्पं विनिर्दिशेत्॥ १॥
स्तम्भने मोहने चैव पीतपुष्पमं विनिर्दिशेत्।
उच्चाटने मारणे च कृष्णापुष्पं विनिर्दिशेत्॥ २॥
अनेनैव ध्यानं स्यात् पुष्पवर्णकम्।
एवं पुष्पविधिः प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि॥ ३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इक्कीस दिन तक आदि से अन्त तक जपकर, भोग, मुक्ति तथा शान्ति के लिए एक सौ आठ सफेद फूल चढ़ावे। आकर्षण तथा वशीकरण के लिए जप के अन्त में एक सौ आठ लाल फूल चढ़ाए। स्तम्भन तथा मोहन के लिए एक सौ आठ पीले फूल चढ़ाएँ। उच्चाटन तथा मारण की प्रक्रिया में एक सौ आठ काले फूल चढ़ाएँ। यह पूजा तथा जप करने के लिए फूल समर्पण की विधि है और उपर्युक्त मनोभिलाषित कार्यों में ध्यान के लिए तत्सम्बन्धी वर्ण के पुष्प लेकर ही ध्यान करना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विपरीत प्रत्यङ्गिरा स्तोत्रम्

श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः।

अथ विनियोग—ॐ अस्य श्रीविपरीत-प्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य भैरव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरा देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

अथ करन्यास—ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्री मध्यमाभ्यां नमः। ॐ प्रत्यङ्गिरे अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मां रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मम शत्रून्भञ्जय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादिन्यासः। ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धः। *मूलमन्त्र*—ॐ ऐं ह्रीं श्रींप्रत्यङ्गिरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून्भञ्जय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भञ्जय फे हुँ फट् स्वाहा।

अष्टोत्तरशतञ्चास्य जपं चैव प्रकीर्तितम्।
ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोऽनुष्टुप् प्रकीर्तितम्॥
देवता दैशिका रक्ता वाम प्रत्यङ्गिरेति च॥
पूर्वबीजैः षडङ्गानि कल्पयेत्साधकोत्तमः।
सर्वदृष्टोपचारैश्च ध्यायेत्प्रत्यङ्गिरां शुभां॥
टंकं कपालं डमरुं त्रिशूलं सम्भ्रती चन्द्रकलावतंसा।
पिंगोर्ध्वकेशाऽसितभीमदंष्ट्रां भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली॥
एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमेकविंशतिवासरान्।
शत्रूणां नाशनं ह्येतत्प्रकाशोऽयं सुनिश्चयः॥
अष्टम्यामर्धरात्रे तु शरत्काले महानिशि।
आधारिता चेच्छ्रीकाली तत्क्षणात् सिद्धिदानृणाम्॥
सर्वोपचारसम्पन्ना वस्त्ररत्नकलादिभिः।
पुष्पैश्च कृष्णवर्णैश्च साध्येत्कालिकां वराम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्षादूर्ध्वमजम्ममेषम्मृदं वाथ यथाविधि।
दद्यात् पूर्वं महेशानि ततश्च जपमाचरेत्॥
एकाहात् सिद्धिदा काली सत्यं सत्यं न संशयः।
मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्यात् समाहितः॥
मरीचलाजालवणैस्सार्षपैर्मरणं भवेत्।
महाजनपदे चैव न भयं विद्यते क्वचित्॥
प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्ततः।
मध्ये वामाङ्कितं कृत्वा शत्रुरूपांश्च पुत्तलीन्॥
जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ जुहुयात्ततः।
तत्रायुतं जपं कुर्यात् त्रिरात्रं मारणं रिपोः॥
महाज्वाला भवेत्तस्य तद्वत्ताशलाकया।
गुदद्वारे प्रदद्याच्च सप्ताहान्मारणं रिपोः॥
प्रत्यङ्गिरा मया प्रोक्ता पठिता पाठिता नरैः।
लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुच्यते सर्वपापेभ्यो नाल्पमृत्युः कथंचन।
ग्रहाः ऋक्षास्तथा सिंहा भूता यक्षाश्च राक्षसाः॥
तस्या पीडां न कुर्वन्ति दिवि भुव्यन्तरिक्षगाः।
चतुष्पदेषु दुर्गेषु वनेषूपवनेषू च॥
श्मशाने दुर्गमे घोरे संग्रामे। शत्रुसंकटे॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां पां लां क्षां ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं बां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ सः हुँ ॐ ॐ क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ॐ हुँ प्लुं रक्षां कुरु। ॐ नमो विपरीतप्रत्यङ्गिरायै विद्याराज्ञि त्रैलोक्यवशंकरि तुष्टिपुष्टिकरि सर्वपीड़ापहारिणि सर्वापन्नाशिनि सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिनि मोदिनि सर्वशस्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि तथा। परमतन्त्रमन्त्रयन्त्रविषचूर्ण-सर्वप्रयोगादीन्येषां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निवर्तयित्वा यत्कृतं तन्मेऽस्तु कलिपातिनि सर्वहिंसा मा कारयति अनुमोदयति मनसा वाचा कर्मणा ये देवासुरराक्षसास्तियग्योनि-सर्वहिंसका विरूपकं कुर्वन्ति मम मन्त्रतन्त्रयन्त्रविषचूर्ण-सर्वप्रयोगादीनात्महस्तेन यः करोति करिष्यति कारयिष्यति तान् सर्वानन्येषां निवर्तयित्वा पातय कारय मस्तके स्वाहा।

॥ इति श्री विपरीत प्रत्यिङ्गिरा समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ श्री रुद्रयामल तन्त्रान्तर्गत—

प्रत्यङ्गिरा कवचम्

देव्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रार्थ-पारग।
देव्याः प्रत्यङ्गिरायाश्च कवचं यत् प्रकाशितम् ॥ १ ॥
सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्व मयि प्रभो!

भैरव उवाच

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ॥ २ ॥
सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चाऽतिदुर्लभम्।
सर्वसिद्धिमयं देवि! सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥ ३ ॥
पठनाच्छ्रवणान्मर्त्य-स्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग् भवेत्।
सर्वार्थसाधकस्याऽस्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥ ४ ॥
छन्दो विराट् पराशक्तिर्जगद्धात्री च देवता।
धर्माऽर्थ-काम-मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणवं मे शिरः पातु वाग्भवं च ललाटकम्।
ह्रीं पातु दक्षनेत्रं मे लक्ष्मीर्वामं सुरेश्वरी॥६॥
प्रत्यङ्गिरादक्षकर्णं वामे कामेश्वरी तथा।
लक्ष्मीःप्राणं सदा पातु बन्धनं पातु केशवः॥७॥
गौरी तु रसनां पातु कण्ठं पातु महेश्वरः।
स्कन्धदेशं रतिः पातु भुजौ तु मकरध्वजः॥८॥
शंखं निधिकरः पातु वक्षः पद्मनिधिस्तथा।
ब्राह्मी तथ्यं सदा पातु नाभिं पातु महेश्वरी॥९॥
कौमारी पृष्ठदेशं तु गुह्यं रक्षतु वैष्णवी।
वाराही च कटिं पातु चैन्द्री पातु पदद्वयम्॥१०॥
भार्यां रक्षतु चामुण्डा लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान्।
इन्द्रः पूर्वे सदा पातु आग्नेय्यामग्निदेवता॥११॥
याम्ये यमः सदा पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिस्तथा।
पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता॥१२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौम्यां सोमः सदा पातु चैशान्यामीश्वरो विभुः।
ऊर्ध्वं प्रजापतिः पातु ह्यधश्चाऽनन्तदेवता॥१३॥
राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रान्तरे तथा।
जले स्थले चाऽन्तरिक्षे शत्रूणां निवहे तथा॥१४॥
एताभिः सहिता देवी चतुर्बीजा महेश्वरी।
प्रत्यङ्गिरा महाशक्तिः सर्वत्र मां सदाऽवतु॥१५॥
इति ते कथितं देवि! सारात्सारं परात्परम्।
सर्वार्थसाधनं नाम कवचं परमाऽद्भुतम्॥१६॥
अस्याऽपि पठनात् सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः।
इन्द्राद्याः सकला देवाः धारणात् पठनाद्यतः॥१७॥
सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः।
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव सकृत् पठेत्॥१८॥
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।
प्रीतिमन्येऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे॥१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाणी च निवसेद् वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः।
यो धारयति पुण्यात्मा सर्वार्थसाधनाभिधम्॥ २०॥
कवचं परमं पुण्यं सोऽपि पुण्वतां वरः।
सर्वैश्वर्ययुतौ भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥ २१॥
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा।
बहुपुत्रवती भूत्वा धन्याऽपि लभते सुतम्॥ २२॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तत्तनुम्।
एतत् कवचमज्ञात्वा यो जपेत् परमेश्वरीम्॥ २३॥
दारिद्र्यं परमं प्राप्य सोऽचिरान् मृत्युमाप्नुयात्॥

श्री यन्त्र पूजा विधान (लेखक : कुलपति मिश्र)

श्री यन्त्र के उपासक की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा घर में लक्ष्मी का वास स्थिर बना रहता है। इसी की विधिवत् पूजा के लिए यह पुस्तक तैयार हो चुकी है जिसमें श्री यन्त्र का एक बड़ा पोस्टर भी है जिसे आप घर, दुकान या कार्यालय में भी लगा सकते हैं। मँगवाने के लिए सम्पर्क करें—

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री काली देवी जी की आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा,
हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल,
ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बे न कर विलम्बे,
सन्तन के भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली,
जै काली कल्याण करे॥ १॥

बुद्धि विधाता तू जगमाता,
मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा,
शरण तुम्हारी आन परे॥
जब जब भीर पड़े भक्तन पर,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तब तब आय सहाय करे।
सन्तन प्रतिपाली॥ २॥

बार-बार तै सकल जग मोह्यो,
तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावै,
कहीं भार्या बन भोग करे॥
सन्तन सुखदाई सदा सहाई,
सन्त खड़े जयकार करें।
सन्तन प्रतिपाली॥ ३॥

ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिए,
भेंट देन तव द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता,
सिर सोने का छत्र फिरे॥
वार शनिश्चर कुंकुम वरणी,
जब लुँकड़ पर हुकुम करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सन्तन प्रतिपाली ॥ ४ ॥

खड्ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए,
रक्त बीज कूं भस्म करे।
शुम्भ निशुम्भ क्षणहि में मारे,
महिषासुर को पकड़ दले॥
आदित वारी आदि भवानी,
जन अपने का कष्ट हरे।
सन्तन प्रतिपाली ॥ ५ ॥

कुपित होय कर दानव मारे,
चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखौ दयारूप हो,
पल में संकट दूर टरे॥
सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता,
जनकी अर्ज कबूल करे।
सन्तन प्रतिपाली ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सात वार की महिमा बरनी,
सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ कर चढ़ी भवानी,
अटल भवन में राज्य करे॥
दर्शन पावे मंगल गावें,
सिध साधक तेरी भेंट धरे।
सन्तन प्रतिपाली॥ ७॥

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे,
शिवशंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करैं आरती,
चमर कुबेर डुलाय रहे॥
जय जननी जय मातु भवानी,
अचल भवन में राज्य करे।
सन्तन प्रतिपाली ॥ ८॥

सब प्रकार के शुद्ध छपे हुए स्तोत्र, कवच, स्तुति, उपासना पाठ इत्यादि प्राप्त करने के लिए याद रखें—
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रणधीर प्रकाशन हरिद्वार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection